REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

"जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक विचारों का अध्ययन"

सत्यप्रकाश तिवारी[१] , डॉ. रतन कुमार भारद्वाज[२]
[१] शोधकर्त्ता, शिक्षा , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.
[२] आचार्य , संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय लाल कोठी,स्कीम जयपुर.

प्रस्तावना –

सत्य की खोज के अभाव में मानवीय गरिमा का, मानव सभ्यता और संस्कृति का पतन हुआ है। ऐसी विषम परिस्थितियों में व्यक्ति की मुक्त प्रतिभा, अन्तर्दृष्टि और आत्मबोध से सत्य और वास्तविकता के धरातल पर प्रत्येक समस्या का सामना और समाधान किया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति और ऐसे समाज का निर्माण सम्यक शिक्षा और सम्यक दर्शन से ही सम्भव है। भारत में ऐसे अनेक व्यक्ति, दार्शनिक और सत्यान्वेषक हुए हैं जिनमें ऐसी प्रतिभा और अन्तर्दृष्टि थी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं वरन् समग्र जीवन में आन्तरिक समृद्धि से मानव कल्याण किया है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति ऐसे ही अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न महामानव थे, जिनका समग्र जीवन सत्य के लिए, आत्मबोध के लिए, मुक्ति के लिए, मानव सृजन और कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी समग्र जीवन दृष्टि, उनका परिदर्शन और सम्यक शिक्षा भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासांगिक, प्रायोगिक, महत्वपूर्ण, सार्थक और उपादेय है। जिनके सम्बन्ध में यह अध्ययन प्रस्तुत है।

अध्ययन का महत्त्व :–

प्रत्येक दृश्यमान घटना की एक बाह्य अवस्था तथा एक आन्तरिक अवस्था है। प्रथम का प्रत्यक्ष ज्ञान होता हैं दूसरे का परोक्ष ज्ञान। प्रत्यक्ष ज्ञान की विषय वस्तु विज्ञान और तकनीकी सूचना प्रौद्योगिकी आदि है, जबकि दर्शन परोक्ष ज्ञान की विषय वस्तु है। इन दोनों के समन्वय के बिना शिक्षा अपूर्ण है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति ने आजीवन सत्य, आत्मज्ञान, मुक्ति और शिक्षा हेतु अपना सर्वस्व जीवन समर्पित किया है। **जिद्दू कृष्णमूर्ति** कहते हैं– "मेरी चिन्ता सिर्फ मनुष्य को परम रूप में बिना किसी प्रतिबन्ध के मुक्त करने की है।" अतः जिद्दू कृष्णमूर्ति का जीवन, दर्शन और शिक्षाएँ आडम्बरविहीन, मौलिक, और समसामयिक है जिससे नवीन मानव, सभ्यता, संस्कृति और समाज का निर्माण सम्भव है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति जो **'विश्व शिक्षक'** के रूप में प्रतिष्ठित और ऋषितुल्य है, जिनकी गणना विश्व के विरल विचारक और दार्शनिक के रूप में की जाती है। वे आधुनिक भारत के नवनिर्माण में प्रासांगिक है। इस सन्दर्भ में जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षाएँ और उनका दर्शन भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण आधुनिक विश्व में उपादेय है। इसलिये शोधकर्त्ता ने जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना और उसकी सार्थकता सिद्ध करना आवश्यक एवं महत्वपर्णू माना है।

अध्ययन का औचित्यः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन जिद्दू कृष्णमूर्ति जी की शिक्षाओं पर आधारित है। जिद्दू कृष्णमूर्ति स्वयं एक अद्वितीय महामानव थे, जिन्हें विश्व के अनेक

दार्शनिकों, लेखकों, विद्वानों, शिक्षकों, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तियों ने **'विश्व शिक्षक'** का सम्मान दिया है। मानव के समग्र प्रस्फुटन और सम्यक शिक्षा के लिये जिद्दू कृष्णमूर्ति आजीवन समर्पित रहे। इसलिये भारत सहित विश्व के अनेक देशों में उन्होंने स्वतन्त्र शिक्षण संस्थाएं निर्मित करने की प्रेरणा दी। जिद्दू कृष्णमूर्ति युवकों की एक ऐसी पीढ़ी विकसित करना चाहते थे जो जीवन के मौलिक प्रश्नों को उठाने, समझने और समाधान करने की क्षमता प्राप्त कर सकें। उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों का इसके लिए आह्वान किया है।

शोधकर्ता स्वयं एक शिक्षक है, जिसने जिद्दू कृष्णमूर्ति जी की शिक्षाएं पढ़ने और समझने के पश्चात यह अनुभव किया कि जिद्दू कृष्णमूर्ति ने शिक्षक के लिये कोई ऐसी जगह ही नहीं छोड़ी जहां स्थिर होकर वह शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्तों में उलझ सके। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने विद्यार्थियों में और अन्ततः समस्त मानव समाज में आमूल परिवर्तन लाने के लिये शिक्षकों पर ही यह उत्तरदायित्व सौंपा है। उन्होंने विश्व की प्रत्येक चुनौती और समस्या से पलायन करने के बजाय उनका सामना करना, समझना और समाधान खोजना सिखाया है। इस प्रकार शोधकर्ता ने जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं में दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विचारों का अवलोकन किया है। जो सर्वथा अद्वितीय, नवीन, सार्थक और उपादेय हैं।

समस्या कथन :–जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन

शोध समस्या से उभरने वाले प्रश्न :–

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार – तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा एवं मूल्य मीमांसा क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य :–

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार – तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा एवं मूल्य मीमांसा का अध्ययन करना।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध कार्य में शोध का स्वरूप वर्णनात्मक रखा गया है। तथा शोध की विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत अध्ययन की भी कुछ सीमायें है जो कि निम्नलिखित है–

1. इस अध्ययन में जे. कृष्णमूर्ति के केवल शैक्षिक व दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया गया है।
2. इस अध्ययन में जे. कृष्णमूर्ति के दार्शनिक विचारों के अंतर्गत उन्हीं सीमित दार्शनिक पक्षों का अध्ययन किया गया है। जिनका सम्बंध शिक्षा से है।

द्वितीय अध्याय 'सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन '

अध्याय–२ **'सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन'** से सम्बन्धित है। इस अध्याय में जे. कृष्णमूर्ति से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययनों की समीक्षा की गयी है। साहित्य की समीक्षा में जे. कृष्णमूर्ति के विभिन्न चिन्तनों से सम्बन्धित पूर्व में किये गये अध्ययनों की समीक्षा की गयी है।

तृतीय अध्याय ' जे. कृष्णमूर्ति व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

जे. कृष्णमूर्ति का जीवन परिचय :– जिद्दू कृष्णमूर्ति जी का जन्म दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश के मदनपल्ली गांव में हुआ। माँ के अवसान के बाद पिताजी, भाई लोग और बुआ के साथ कृष्णा भी अडयार में रहने आया जहां वे थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़े।

कृष्णमूर्ति जी का किसी राष्ट्रीयता, जाति, धर्म या दर्शन के प्रति कोई निष्ठा नहीं थी, और उन्होंने अपना शेष जीवन बड़े और छोटे समूहों और व्यक्तियों से चर्चा करते हुए, दुनियां की यात्रा करते हुए बिताया। उन्होने कई किताबे लिखी, उनमें द फर्स्ट एण्ड लास्ट फ्रीडम, द ओनली रिवोल्यूशन

और कृष्णमूर्ति की नोटबुक मुख्य हैं। उनकी कई बातें और चर्चाए भी प्रकाशित हुई हैं। उनकी आखरी सार्वजनिक वार्ता मद्रास, भारत में थी। जनवरी १९८६ में कैलिफोर्नियां के ओजई में उनका देहावसान हो गया। उनके भारत, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षा संस्थान आज भी उनके समर्थको द्वारा संचालित किये जाते हैं। जो उनके विचारों को मूर्त रूप देते है।

चतुर्थ अध्याय 'जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन '

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार दर्शन की परिभाषा – दर्शन वह जो हमें सत्य के लिए प्रेरित, 'जीवन के लिए प्रेम' और 'प्रज्ञा के लिए प्रेम' जागृत करता है। दर्शन व्यक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराता है कि 'मै कौन हूँ' वाह्य एवं आन्तरिक जगत् में होने वाले प्रत्येक स्पन्दन का प्रतिक्षण बोध होना ही वास्तविक दर्शन है।[1]

मीमांसा दर्शन एवं जे° कृष्णमूर्ति का दृष्टिकोण –जे. कृष्णमूर्ति किसी धर्म ग्रन्थ या शास्त्र को ज्ञान का स्रोत या प्रमाण नहीं मानते हैं। मीमांसा दर्शन वेद विहित कर्म को ही धार्मिक, नैतिक और सामाजिक कर्म के रूप में उचित कर्म स्वीकार करता है। जबकि कृष्णमूर्ति किसी भी धर्म ग्रन्थ या शास्त्र के अनुसार संस्कार या कर्म अस्वीकार करते हुए स्वतन्त्रता और संवेदनशीलता के साथ विवेक और प्रज्ञा से प्रेरित कर्म को स्वीकार करते हैं। कृष्णमूर्ति सत्यान्वेषण और आत्मानुसंधान को जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं न कि मोक्ष को।

कृष्णमूर्ति के दर्शन में तत्व मीमांसा –

सत्य के सम्बन्ध में जे. कृष्णमूर्ति के विचार – जे. कृष्णमूर्ति जी कहते है कि अज्ञानी वह व्यक्ति नहीं है जो पढ़ना लिखना नहीं जानता वास्तव में अज्ञानी वह है जो स्वयं की सत्ता से अपरिचित है जो स्वयं की सत्ता से अनभिज्ञ है। ऐसे सत्य की खोज करना ही जीवन का लक्ष्य है।

जे. कृष्णमूर्ति के ईश्वर सम्बन्धी विचार – कृष्णमूर्ति जी ईश्वर का निषेध तो नही करते, परन्तु ऐसा मानते है कि उस अनुभूति को विचारों द्वारा सम्प्रेषित नहीं किया जा सकता।

कृष्णमूर्ति जी ईश्वर शब्द पर कोई बल नहीं देते उनका कहना है न तो ईश्वर शब्द ही ईश्वर है न मंदिरों आदि में रखी ईश्वर की प्रतिमा ही ईश्वर है। हम तरह–तरह के विश्वासों, मतों से ईश्वर को ढकतें रहते है, जो सब की सब मनुष्य द्वारा ही अवष्किृत संरचनाएं है। और मनुष्य इसका आविष्कार करके इसी में फंस गया। कृष्णमूर्ति जी का कहना है कि ईश्वर असीम कालातीत है उसे मंदिरों में बंद नहीं किया जा सकता है। जो ईश्वर मंदिर में बंद है वह तो हमारे मिथ्या विश्वास, रूढ़ियों के भय के कारण मन की उपज है, जिसे प्रतिभाओं के रूप में महिमा मण्डित किया जाता है वास्तविक रूप से ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है।

कृष्णमूर्ति जी के अनुसार धर्म का अर्थ किसी प्रकार की संस्कारबद्धता नहीं है। धर्म परम शांति की एक अवस्था है, जिसमें सत्यता है, वही ईश्वर है ।

कृष्णमूर्ति जी का कहना है कि मैं न तो किसी धार्मिक मत की शिक्षा दे रहा हूँ, न ही किसी नये प्रामाण्य को आरोपित करना चाहता हूँ, मेरा तो एकमात्र उद्देश्य है कि कैसे मनुष्यता मुक्त होकर शाश्वत आनन्द में निमग्न हो जाये जहाँ ना तो किसी प्रकार का दुःख है ना ही चिंता की कोई रेखा। मैं उस जगत को पहुँच चुका हूँ, जहाँ शाश्वत आनन्द है और दूसरे भी उसकी झलक पा सकें। उस दृष्टि से मैं उनकी सहायता करूँगा।

कृष्णमूर्ति जी का दर्शन सभी प्रकार की मान्यताओ, विश्वासों और तुलनाओं से ऊपर उठकर, वस्तु के वास्तविक स्वरूप को देखने के लिए प्रेरित करता है। कृष्णमूर्ति जी का दर्शन मानवीय समस्याओं

[1] जे0 कृष्णमूर्ति, प्रथम और अन्तिम मुक्ति, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ,पृ0 108

पर विचार करके उसके निराकरण को प्रस्तुत करने वाला यथार्थवादी दर्शन है, जिसमें मानवीय समस्याओं का निदान आवश्यक है।

कृष्णमूर्ति के दर्शन में ज्ञान मीमांसा

ज्ञान – कृष्णमूर्ति जी ज्ञान के तीन स्वरूप मानते हैं। प्रथम 'वैज्ञानिक ज्ञान' जिससे ऐतिहासिक, भौगोलिक, भाषाशास्त्रीय, गणितीय तथा वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान समाहित है। दूसरा 'सामूहिक ज्ञान' जिसमें हमारे पूर्वजों के अनुभव से उत्पन्न ज्ञान का संचयन है तीसरा 'व्यक्तिगत ज्ञान' है जो हमारे व्यक्तिगत अनुभवों से प्राप्त हुआ है।

प्रज्ञा – हम अपनी संवेदनशीलता एवं चुनावरहित सजगता से किसी घटना को उसकी सम्पूर्णता में देखते है तो यह अवलोकन ही प्रत्यक्ष ज्ञान है। जिसे कृष्णमूर्ति ने प्रज्ञा माना है। प्रज्ञा के कारण ही हम पृथ्वी का सौन्दर्य, वृक्षों का सौप्दर्य, आकाश का सौन्दर्य, तारों के सौन्दर्य का अवलोकन कर सकते हैं। ज्ञान प्रज्ञा के द्वारा कार्य नही कर सकता किन्तु प्रज्ञा ज्ञानपूर्वक कार्य कर सकती है। वह ज्ञान का उपयोग कर सकती है मात्र ज्ञान हमारी मानवीय समस्याओं को कभी हल नही कर सकता इस तथ्य की समझा की प्रज्ञा है।

ध्यान – जे. कृष्णमूर्ति जी का कहना है कि ध्यान का अर्थ विचार का अन्त होना, अभी तभी एक भिन्न आयाम प्रकट होता है जो समय से परे है। ध्यान किसी साध्य का साधन नहीं है यह साध्य और साधन दोनों है। जो है उसको देखना और उसके पार चले जाना ही ध्यान है।ध्यान मन के भीतर वह ज्योति है, जो क्रिया मार्ग को अवलोकित करती है और इस ज्योति के बिना प्रेम का कोई अस्तित्व नहीं है। ध्यान का अर्थ ऊर्जा का समग्र रूप से निर्बन्ध और निर्मुक्त हो जाना है। मौन से जन्म लेने वाली क्रिया ही ध्यान है। ध्यान विचार से मुक्ति है तथा सत्य के आनन्द में जीना हैं। ध्यान मन की वह अवस्था है, जिसमें मन प्रत्येक जीव को पूर्ण होश के साथ समग्रता पूर्वक देखना है न कि उसके केवल खण्डों को।

जे. कृष्णमूर्ति का आत्मज्ञान के सम्बन्ध में विचार – कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान या स्वयं को जानना है। आत्मज्ञान या आत्मबोध से वंचित व्यक्ति को वे मूढ़ और अज्ञानी की संज्ञा देते हुए कहते हैं "अज्ञानी वह व्यक्ति नहीं है जो विद्वान नहीं है, अज्ञानी व्यक्ति वह है जो स्वयं अपने को नहीं जानता और इस अवबोध के लिए जब विद्वान व्यक्ति पोथियों पर, ज्ञान पर और सत्ता पर निर्भर करता है तो वह मूढ़ है। अवबोध केवल आत्मज्ञान से आता है। जो कि अपनी समस्त मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का अवधान है।"[२]

इस प्रकार स्वयं को जानना या आत्मबोध या आत्मज्ञान मात्र अन्तर्मुखता नहीं है। जे. कृष्णमूर्ति मनुष्य का आन्तरिक और बाह्य विभाजन नहीं करते हैं। जब आन्तरिक प्रवाह बाह्य जगत में अभिव्यक्त होता है तो उसे बर्हिमुखता कहा जाता है। कृष्णमूर्ति कहते हैं– "आत्मबोध का अन्वेषण वह बर्हिमुखी क्रिया है जो बाद में अन्तर्मुखी हो जाती है।"[३]

कृष्णमूर्ति के दर्शन में मूल्य मीमांसा

मानवीय मूल्यों की संकल्पना – कृष्णमूर्ति प्राचीन मान्यताओं अवधारणाओं को नकारते हुए नवीन समाज और नवीन नवीन समाज के मूल्यों के सृजन पर बल देते है शिक्षा नवीन जीवन मूल्यों के सृजन में सहायक होनी चाहिए बालक के मन में प्रचलित मूल्यों को आरोपित करना, उसे आदर्शो के अनुकुल बनाना तथा उसके मन को प्रतिबद्ध करने से सम्यक बुद्धि जागृत नहीं होती है, केवल नवीन ही है जो मौलिक परिवर्तित कर सकता है। **मूल्य परक शिक्षा** – कृष्णमूर्ति जी आपसी संबंधों के लिए सहयोग, परस्पर उतरदायित्व, संवेदनशीलता एवं प्रेम को महत्व देते है वहीं स्वार्थ, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं स्व अस्तित्व के भाव को सामाजिकता के लिए घातक मानते है, मानवीय व्यवहार समाज के परिप्रेक्ष्य में

[2] जे. कृष्णमूर्ति, 'परिसंवाद, मार्च 2005', कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया, वाराणसी, पृ0 24
[3] जे. कृष्णमूर्ति 'परिसंवाद, मार्च 2007', कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया, वाराणसी, पृ0 9

सद्गुण युक्त हो जो सहजता लिए हो, कृष्णमूर्ति जी का मानना है कि किसी व्यवस्था का अनुगमन कर लेना ही राजनीति नहीं है जिसमें परम्परायें, बाध्यतायें, नियम एवं निश्चित स्वरूप की अवस्थाएं हैं। विश्व शांति के लिये सार्वभौमिक हृदय की गहराई को मानवीय संवेदना के स्तर पर स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय को स्वीकारतें है। कृष्णमूर्ति के अनुसार सदियों से चली आ रही संस्कृति जो विश्व में अलगाववाद लिये हुए है इसके लिये पूर्णतः नवीन एवं एक संस्कृति हो और इसके लिये आवश्यक है कि मानव अपने विभिन्न आदर्शों परम्पराओं एवं संस्कारयुक्त जीवन से मुक्त होकर समष्टि के प्रेम से भर जाये, कृष्णमूर्ति समस्त विश्व के लिये एक संस्कृति और समान मूल्यों को महत्व देते हैं।

निष्कर्ष :-

जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन में न तो कोई कल्पना है न ही किन्हीं सिद्धान्तों की व्याख्या ही। उनका शिक्षा-दर्शन शिक्षा के सभी पहलुओं पर विचार व्यक्त करता है। जे. कृष्णमूर्ति किसी धर्म ग्रन्थ या शास्त्र को ज्ञान का स्रोत या प्रमाण नहीं मानते हैं। कृष्णमूर्ति स्वतन्त्रता और संवेदनशीलता के साथ विवेक और प्रज्ञा से प्रेरित कर्म को स्वीकार करते हैं। कृष्णमूर्ति सत्यान्वेषण और आत्मानुसंधान को जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं न कि मोक्ष को। मानव के अस्तित्व का केवल एक ही उद्देश्य है और वह है सत्य की खोज करना, परमात्मा की खोज करना। निःसन्देह मानवीय मन, जिसमें इतनी आश्चर्यजनक महान् शक्ति है यदि सत्य की परमात्मा की खोज नहीं करता तो उसकी शक्ति द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य विनाश एवं पीड़ा का होगा। कृष्णमूर्ति जी ईश्वर का निषेध तो नहीं करते, परन्तु ईश्वर को एक अनुभूति मानते हैं जिसे विचारों द्वारा सम्प्रेषित नहीं किया जा सकता। कृष्णमूर्ति जी के दर्शन के अनुसार जिज्ञासु को सदा अपनी परम्पराओं, विश्वासों एवं गुरुओं पर संदेह करना चाहिए, संदेह एक महाऔषधि है। संदेह सत्य के मन्दिर तक पहुँचने के एक अनिवार्य सीढ़ी है। कृष्णमूर्ति जी ने धर्म का अर्थ किसी प्रकार की संस्कारबद्धता को नहीं माना है। बल्कि धर्म को परम शांति की एक अवस्था माना है। अतः कृष्णमूर्ति जी के अनुसार सम्पूर्ण मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य मुक्ति और आनन्द की प्राप्ति है।

कृष्णमूर्ति जी का दर्शन मानवीय समस्याओं पर विचार करके उसके निराकरण को प्रस्तुत करने वाला यथार्थवादी दर्शन है, जिसमें मानवीय समस्याओं का निदान आवश्यक है।

कृष्णमूर्ति जी ज्ञान को 'वैज्ञानिक ज्ञान' जिससे ऐतिहासिक, भौगोलिक, भाषाशास्त्रीय, गणितीय तथा वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान, 'सामूहिक ज्ञान' जिसमें हमारे पूर्वजों के अनुभव से उत्पन्न ज्ञान का संचयन है तथा 'व्यक्तिगत ज्ञान' जो हमारे व्यक्तिगत अनुभवों से प्राप्त होता है आदि के तीन स्वरूप ही मानते हैं। संवेदनशीलता एवं चुनावरहित सजगता से किसी घटना को उसकी सम्पूर्णता में देखना ही प्रत्यक्ष ज्ञान है। जिसे कृष्णमूर्ति ने प्रज्ञा माना है।

कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान या स्वयं को जानना है। कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन की प्रमुख विशेषता आत्मज्ञान व आत्मबोध की प्राप्ति करना है आत्मज्ञान ही समस्त समस्याओं के समाधान का मार्ग है।

शिक्षा में कृष्णमूर्ति मूल्यांकन का निषेध करते है कृष्णमूर्ति आपसी संबंधों के लिए सहयोग, परस्पर उतरदायित्व, संवेदनशीलता एवं प्रेम को महत्व देते है वहीं स्वार्थ, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं स्व अस्तित्व के भाव को सामाजिकता के लिए घातक मानते है, मानवीय व्यवहार समाज के परिप्रेक्ष्य में सद्गुण युक्त हो जो सहजता लिए हो, कृष्णमूर्ति द्वारा बाहरी क्रिया-काण्ड़ को धर्म नहीं माना गया है, मन्दिर में जाने और विश्वास रखने में भी धर्म नहीं है, इनके अनुसार श्रद्धा मनुष्य को बांटती है अतः श्रद्धा विनाश, दुश्मनी और विभाजन को जन्म देती है यह निश्चित ही धर्म नहीं है।

कृष्णमूर्ति समस्त विश्व के लिये एक संस्कृति और समान मूल्यों को महत्व देते हैं, जहां विभिन्न विचार प्रणालियां, व्यक्ति को प्रतिबद्ध करने वाली शक्तियां नहीं होगी वरन् नवीन संस्कृति में एकता, सार्वभौमिकता, सहयोग, समानता, स्वतंत्रता, प्रेम, अहिंसा, सत्य और बंधनमुक्ता होगी। और जो वास्तविकता हो उसके अनुरूप ही मानव की जीवन शैली हो।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव :–

१. जे. कृष्णमूर्ति जी के जीवन दर्शन का अन्य शिक्षा विदों के विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
२. जे. कृष्णमूर्ति जी के विचारों का स्थूल स्वरूप में उनके द्वारा स्थापित शिक्षा केन्द्रों को केस स्टडी बनाकर शोध किया जा सकता है।
३. जे. कृष्णमूर्ति जी के शिक्षा–दर्शन को भारत ही नहीं पूरे विश्व में अपनाया गया है अतः भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के विचारकों में जे.कृष्णमूर्ति के शिक्षा–दर्शन पर शोध किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कृष्णमूर्ति, जे.(2003). अन्तिम वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
2. कृष्णमूर्ति, जे.(2000). आन्तरिक प्रस्फुटन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
3. कृष्णमूर्ति, जे.(1999). आमूल क्रान्ति की आवश्यकता, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
4. कृष्णमूर्ति ,जे.(1998). काल और काल से परे, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
5. कृष्णमूर्ति ,जे.(2003). गरुड़ की उड़ान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
6. कृष्णमूर्ति, जे.(2000). जीवन की पुस्तक, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
7. कृष्णमूर्ति, जे.(2004). ध्यान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
8. कृष्णमूर्ति, जे.(2002). ध्यान में मन, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
9. कृष्णमूर्ति, जे.(2000) परम्परा जिसमें अपनी, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
10. कृष्णमूर्ति, जे.(2001). युद्ध और शान्ति, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
11. कृष्णमूर्ति, जे.(2000). प्रेम स्वयं से एक संलाप, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
12. कृष्णमूर्ति, जे.(2004). मानवता का भविष्य, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
13. कृष्णमूर्ति, जे.(2000). वाशिंगटन वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
14. लल, रमन बिहारी.(2007) .भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

पत्र–पत्रिकाएँ, सर्वेक्षण, रिपोर्ट, शोध ग्रन्थ

1. परिसंवाद जे. कृष्णमूर्ति. जन्मशती विशेषांक, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
2. परिसंवाद अंक 63.64 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
3.परिसंवाद अंक (जनवरी–मार्च 2005). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
4.परिसंवाद अंक (जुलाई–सितम्बर 2005). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
5. परिसंवाद अंक (दिसम्बर 2006). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी
6. परिसंवाद अंक (सितम्बर 2007). कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी

सत्यप्रकाश तिवारी
शोधकर्त्ता, शिक्षा , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.